रंगोत्सव की विदाई का दिन रंगपंचमी देवता होते हैं आकर्षित

होली यानि ब्रह्मांड का एक तेजोत्सव है। विविध तेजोत्सव तरंगों के भ्रमण से ब्रह्मांड में अनेक रंग आवश्यकता के अनुसार साकार होते हैं। कहा जाता है कि त्रेतायुग के प्रारंभ में श्रीहरि विष्णु ने धूलि वंदन किया, इसका अर्थ यह है कि उस युग में श्री विष्णु ने अलग- अलग तेजोमय रंगों से अवतार कार्य का आरंभ किया। धर्म वैज्ञानिक पंडित वैभव जोशी के अनुसार चैत्र कृष्ण पंचमी को खेली जाने वाली रंगपंचमी आह्वान करने के लिए होती है। यह सगुण आराधना का भाग है। ब्रह्मांड के तेजोमय सगुण रंगों का पंचम स्रोत सक्रिय कर देवता के विभिन्न तत्वों की अनुभूति लेकर उन रंगों की ओर आकृष्ट हुए देवता के तत्व के स्पर्श की अनुभूति लेना, रंगपंचमी का उद्देश्य है। इस दिन वातावरण में उड़ते हुए गुलाल व्यक्ति के सात्विक गुणों में अभिवृद्धि करते हैं और उसके तामसिक और राजसिक गुणों का नाश होता है। सतोगुण की स्थिति व्यक्ति को तभी हासिल होती है जब उसके तामसिक और राजसी प्रवृत्तियां कम होती है।

कैसे पड़ा रंग पंचमी नाम

पंडित वैभव जोशी बताते हैं कि चैत्र मास में कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को रंग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। इसी के चलते इसको ये नाम मिला है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन आसमान में रंग उड़ाने से रज और तम के प्रभाव कम हो कर उत्सव का सात्विक स्वरूप निखरता है और देवी- देवता भी प्रसन्न होते हैं। ये भी कहा जाता है कि आसमान से ही रंगों के जरिए भगवान भी अपने भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। उत्तर भारत में जितनी धूमधाम से होली मनाई जाती है, उतने ही उत्साह से कुछ राज्यों में रंग पंचमी का त्योहार मनाते हैं।

इन चार इलाकों में है प्रचलित

रंग पंचमी का चलन भारत के चार क्षेत्रों में सबसे ज्यादा दिखाई देता है। ये इलाके हैं महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश और मालवा का पठार। पंडित वैभव कहते हैं कि महाराष्ट्र में दुलहंडी यानि रंग वाली होली के दिन से रंग खेलने की शुरुआत हो जाती है और पंचमी तक चलती है। ये पंचमी ही रंग पंचमी कहलाती है। इस अवसर पर कई पकवान बनते हैं जिसमे मुख्य रूप से पूरनपोली बनती है। इसके साथ ही रंग पंचमी पर सूखे रंगों से होली खेली जाती है। इस दौरान मछुआरों की बस्ती में विशेष तौर पर आयोजन होते हैं, जैसे नाच, गाना आदि, कहते हैं कि ये समय शादी विवाह तय करने का सर्वोत्तम होता है क्योंकि मछुआरे इस अवसर पर एक दूसरे के घरों को मिलने जाते हैं और परिवारों के बारे में जानकारी मिलती है। इसी तरह राजस्थान में इस दिन खास तौर पर जैसलमेर के मंदिर महल इलाके में खूब धूमधाम होती है। लोकनृत्यों आदि का आयोजन होता है और हवा में लाल, नारंगी और फिरोजी रंग उड़ाए जाते हैं। वहीं मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में इस दिन सड़कों पर रंग मिला सुगंधित जल छिड़का जाता है, और लोग जलूस की शक्ल में रंग उड़ाते हुए निकलते हैं। साथ ही होली के बाद एक बार फिर जम कर रंग खेला जाता है। इसी तरह से लगभग पूरे मालवा के पठार में इस दिन जलूस निकालने की परंपरा है इसे गेर कहते हैं।

प्राचीनकाल से ही होती है रंगपंचमी

इस पर्व का इतिहास काफी पुराना है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में जब होली का उत्सव कई दिनों तक मनाया जाता था उस समय रंगपंचमी के साथ उसकी समाप्ति होती थी और उसके बाद कोई रंग नहीं खेलता था। वास्तव में रंग पंचमी होली का ही एक रूप है जो चैत्र मास की कृष्ण पंचमी को मनाया जाता है। होली का आरंभ फाल्गुन माह के साथ हो जाता है और फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन के बाद यह उत्सव चैत्र मास की कृष्ण प्रतिपदा से लेकर रंग पंचमी तक चलता है। देश के कई हिस्सों में इस अवसर पर धार्मिक और सांकृतिक उत्सव आयोजित किये जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार रंग पंचमी अनिष्टकारी शक्तियों पर विजय पाने का पर्व कहा जाता है।

इस दिन होता है इन विशेष वस्तुओं का महत्व

गुलाल- आज्ञाचक्र पर गुलाल लगाना, पिंड बीज के शिव को शक्ति तत्व का योग देने का प्रतीक है। गुलाल से प्रक्षेपित पृथ्वी व आप तत्व की तरंगों के कारण देह की सात्विक तरंगों को ग्रहण करने में देह की क्षमता बढ़ती है। आज्ञा चक्र से ग्रहण होने वाला शक्तिरूपी चैतन्य संपूर्ण देह में संक्रमित होता है। इससे वायुमंडल में भ्रमण करने वाली चैतन्य तरंगें ग्रहण करने की क्षमता बढ़ती है। इस विधि द्वारा जीव चैतन्य के स्तर पर अधिक संस्कारक्षम बनता है।

वायुमंडल- नारियल के माध्यम से वायुमंडल के कष्टदायक स्पंदनों को खींचकर, उसके बाद उसे होली के पांचवें दिन (रंग पंचमी) की अग्नि में डाला जाता है। इस कारण नारियल में संक्रमित हुए कष्टदायक स्पंदन होली की तेजोमय शक्ति की सहायता से नष्ट होते हैं व वायुमंडल की शुद्धि होती है।

रंग कणों से आकर्षित होते हैं

दिव्य तत्व -इस दिन वायुमंडल में उड़ाए जाने वाले विभिन्न रंगों के रंग कणों की ओर विभिन्न देवताओं के तत्व आकर्षित होते हैं। ब्रह्मांड में कार्यरत सकारात्मक तरंगों के संयोग से होकर जीव को देवता के स्पर्श की अनुभूति देकर देवता के तत्व का लाभ मिलता है।

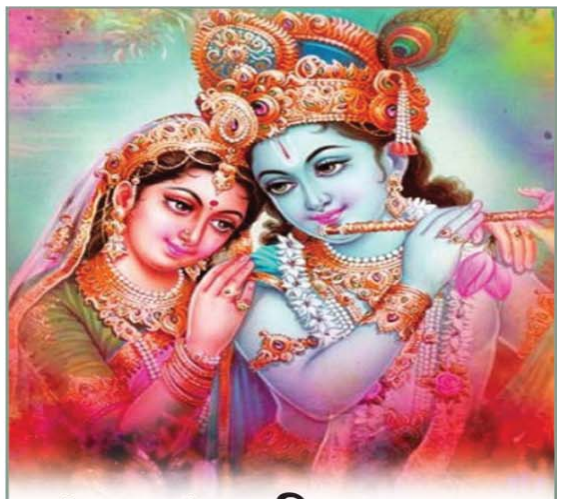

रंग पंचमी, महत्व और किस देवी-देवता पर चढ़ाएं कौन सा रंग

रंग पंचमी का पर्व देश के कई राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है। जिस प्रकार कार्तिक पूर्णिमा देवताओं की दिवाली मानी गई है उसी प्रकार रंग पंचमी को देवताओं की होली माना गया है।

प्रेम और सदभावना का त्योहार होली पर रंगों और गुलाल खेलने का सिलसिला चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुरू होकर कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि तक चलता है। पंचमी तिथि को इस पर्व का समापन होता है, इस दिन को रंग पंचमी के नाम से जाना जाता है। रंग पंचमी का पर्व देश के कई राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है। जिस प्रकार कार्तिक पूर्णिमा देवताओं की दिवाली मानी गई है उसी प्रकार रंग पंचमी को देवताओं की होली माना गया है। इस दिन लोग राधा-कृष्ण को अबीर गुलाल अर्पित करते हैं वहीं देश के कुछ राज्यों में इस दिन जुलूस निकालने की भी परंपरा है।पुराणों के अनुसार रंग पंचमी को देवताओं की होली भी कहा जाता है, इसलिए लोग इस दिन आसमान की ओर गुलाल फेंकते हैं और अपने इष्टदेव से सुख-समृद्धि का आशीर्वाद मांगते हैं। धार्मिक मान्यता है कि इस गुलाल से देवी देवता प्रसन्न होते हैं और जब वो गुलाल वापस नीचे आकर गिरता है, तो उससे पूरा वातावरण शुद्ध हो जाता है हर तरफ की नकारात्मक ऊर्जा एवं बुरी शक्तियों का नाश होता है और चारों तरफ सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है,देवी-देवताओं की कृपा मिलती है।

पौराणिक कथा

रंगपंचमी के दिन प्रभु श्रीकृष्ण ने राधारानी के साथ होली खेली थी। इसी वजह से इस दिन विधि-विधान से राधा-कृष्ण की पूजा करने के बाद गुलाल आदि अर्पित करके खेला जाता है। दूसरी पौराणिक कथा के मुताबिक, होलाष्टक के दिन महादेव ने कामदेव को भस्म कर दिया था जिसकी वजह से देवलोक में सब दुखी थे। मगर देवी रति और देवताओं की प्रार्थना पर कामदेव को दोबारा जीवित कर देने का आश्वासन भगवान महादेव ने दिया तो सभी देवी-देवता प्रसन्न हो गए और रंगोत्सव मनाने लगे। इसके बाद से ही पंचमी तिथि को रंगपंचमी का त्योहार मनाया जाने लगा।

अपने इष्टदेव को इन रंगों में रंग दें

रंग पंचमी के दिन लोग हवा में देवी-देवताओं के निमित्त अलग-अलग फूलों से सुगंधित अबीर-गुलाल को उड़ाते है। इस दिन प्रभु श्री कृष्ण,श्री राम और प्रभु श्री विष्णु को पीला रंग अर्पित कर सकते हैं। ऐसे में उन्हें पीले रंग के वस्त्र पहनाएं तथा उनके चरणों में पीले रंग का अबीर चढ़ाएं। ऐसा करने से आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी,आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास होगा। मां लक्ष्मी, बजरंगबली और भैरव महाराज को लाल रंग अर्पित करें,धन आगमन के साथ-साथ आपके जीवन के क्लेश दूर होंगे। मां बगलामुखी को पीले रंग का अबीर अर्पित करें एवं सूर्यदेव को लाल रंग का गुलाल अर्पित करने से सारे शोक दूर होकर मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शनि देव को नीला रंग बहुत प्रिय होता है,उन्हें नीला रंग अर्पित करें।

क्या होता है देव दोष

ज्योतिष की एक मान्यता अनुसार प्रथम भाव से खानदानी दोष देह पीड़ा, द्वितीय भाव आकाश देवी, तृतीय भाव अग्नि दोष, चतुर्थ भाव प्रेत दोष, पंचम भाव देवी-देवताओं का दोष, छठा भाव ग्रह दोष, सातवां भाव लक्ष्मी दोष, आठवां भाव नाग दोष, नवम भाव धर्म स्थान दोष, दशम भाव पितर दोष, लाभ भाव ग्रह दशा दोष, व्यय भाव पिछले जन्म का ब्रह्म दोष होता है।

कहते हैं कि कोई ग्रह किसी भाव में पीड़ित हो, सूर्य दो ग्रहों द्वारा पीड़ित हो तो जिस घर में होगा वही दोष माना जाता है। देव दोष के 5 कारण और बचने के उपाय। देव दोष और देव ऋण दोनों में फर्क है। चार ऋण होते हैं- देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण और ब्रह्मा ऋण। माना जाता है कि देव ऋण भगवान विष्णु का है। यह ऋण उत्तम चरित्र रखते हुए दान और यज्ञ करने से चुकता होता है। जो लोग धर्म का अपमान करते हैं या धर्म के बारे में भ्रम फैलाते या वेदों के विरुद्ध कार्य करते हैं, उनके ऊपर यह ऋण दुष्प्रभाव डालने वाला सिद्ध होता है।

देव दोष के कारण

ज्योतिष अनुसार देव दोष पिछले पूर्वजों, बुजुर्गों से चला आ रहा होता है, जिसका संबंध देवताओं से होता है।

- कहते हैं कि किसी जातक ने या उसके परिवार ने या उसके पूर्व सदस्यों ने अपने पुर्वजों, गुरु, पुरोहित, कुलदेवी या देवताओं आदि को मानना छोड़ दिया होगा तो यह दोष प्रारंभ हो जाता है।
- यह भी हो सकता है कि वे ये सभी मानते हों लेकिन उन्होंने या उनके पूर्वजों ने कभी पीपल का वृक्ष काट दिया होगा या किसी देव स्थान को तोड़ दिया होगा तो भी देव दोष प्रारंभ हो जाता है।
- कई बार ऐसा भी होता है कि जातक या उसके परिवार ने किसी संत, साधु या किसी अन्य विचारधारा के प्रभाव में आकर देवी, देवता और कुल धर्म को मानना छोड़ दिया हो या वह नास्तिक बन गया हो।
- माना जाता है कि किसी देवी या देवता से मनौती, मन्नत मांगने पर वह पूरी हो जाती है और उसके एवज में जातक वादा पूरा नहीं करता है तो भी देव दोष उत्पन्न होता है। ऐसा भी हो सकता कि जातक ने पूर्वज ने मन्नत मांगी हो और किए गए वादा को पूरा नहीं किया हो। प्राय: हर व्यक्ति मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किसी तीर्थ अथवा देवस्थान में जाकर मनौती मांगता है कि हमारी अमुक कामना की पूर्ति के उपरांत हम आपको पूजा, भेंट, दर्शनादि करेंगे। ऐसा नहीं करने पर यह दोष उत्पन्न हो जाता है।
- यह भी हो सकता है कि किसी जातके पूर्वजों ने अपना धर्म बदल लिया हो और वह किसी अन्य को मानने लगा हो तो उसके इस कर्म का फल उसकी संतानों को भुगतना होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वधर्म और कुलधर्म के बारे में विस्तार से वर्णित किया है। ज्योतिष के अनुसार इसका संबंध बृहस्पति तथा सूर्य से होता है। बृहस्पति नीच, सूर्य भी नीच या दोनों बुरे ग्रहों के फेर में हो तो भी यह माना जाता है कि जातक के कुल खानदान का धर्म बदला गया होगा।

इस दोष का असर

इस दोष का असर सर्वप्रथम संतान पर पड़ता है। संतान नहीं होती, होती है तो पीड़ा देने वाली निकलती है। जीवन कभी भी सुखपूर्वक नहीं व्यतीत होता है। हमेशा कुछ न कुछ कष्ट लगा ही रहता है। रोग और शोक चलता ही रहता है। इसका दूसरा असर नौकरी और कारोबार पर भी पड़ता है जिसमें कभी भी स्थायित्व नहीं रहता है।

उपाय

इस दोष से मुक्ति का उपाय यही है कि फिर से कुल देवी-देवता और कुल धर्म का पालन प्रारंभ कर दें। उत्तरमुखी मकान में रहें और कहीं पर भी एक पीपल का वृक्ष लगाकर उसकी सेवा करें। घर में गीता पाठ का आयोजन करें।